सिद्धान्त

निरंतर विकास के लिए किसानों को नीति निर्धारण के केंद्र में लाना मौलिक है.

सरकारी, व्यापारिक, वैज्ञानिक और नागरिक सामाजिक समूहों को हमारी खाद्य सुरक्षा के स्रोत पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए. इन सभी समूहों को एक साथ मिलकर लाखों किसान परिवारों, खास तौर पर छोटी छोटी ज़मीनों वाले किसानों को, प्रभावशाली मार्केटों, ज्यादा सहयोगी शोधों और समर्पित रूप से जानकारी प्रदान करने के माध्यम से लगातार ज्यादा फसल उगाने की क्षमता प्रदान करनी चाहिए.

कृषि विकास के लिए बहु आयामी, जानकारी आधारित उपाय की जरूरत है.

इस तरीके की शुरूआत किसानों और अपनी ज़मीन का प्रबंधन करने, फसलें उगाने, अपनी फसलों को लाने और मार्केट तक पहुँचाने पर ध्यान केंद्रित करने से होती है. पिछली आधी शताब्दी में आधुनिक कृषि तकनीकों और प्रबंधन उपायों द्वारा विश्व खाद्यान्न उपज दुगुनी किए जाने के बावजूद, कई छोटे किसान जीविका के सबसे बुनियादी स्तर को हासिल करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं. कृषि की ज्यादा उपज देते हुए ज्यादा टिकाऊपन हासिल करने के लिए नए निवेशों, प्रोत्साहनों और नई पद्धतियों की जरूरत है. हमारे साझे पर्यावरण, जैव विविधता और पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षकों के रूप में किसानों की भूमिका को पहचानते हुए ये लाभ सभी किसानों तक पहुँचाए जाने चाहिए. विचारधारा में मूल परिवर्तन की जरूरत है जिसमें ठोस और टिकाऊ कृषि पद्धतियों के केंद्र में किसान होना चाहिए.

निरंतर बढ़िया फसल से ज्यादा पैदावार देने वाला यह तरीका ज्यादा उचित और कुशल कृषि प्रणालियों की ओर भी ले जाने वाला होना चाहिए. बेहतर कार्यकुशल मार्केटों के साथ बेहतर कृषि प्रणाली खाद्य सुरक्षा, उचित मूल्य और बेहतर भूमि प्रबंधन प्रदान करके बेहतर आर्थिक विकास में योगदान देगी.

सफल होने के लिए, कोई भी नया तरीका स्थायी नीति पर्यावरण पर आधारित होना चाहिए जिसमें किसान काम और निवेश कर सकें. इसके बदले में, कृषि के विकास, राष्ट्रीय वित्तीय विभाजन बढ़ाने के लिए; विकासशील देशों में कृषि क्षेत्र की ओर अंतर्राष्ट्रीय विकास सहयोग देने के लिए; और कृषि कार्यक्रमों को बनाने एवं लागू करने में विस्तृत स्टेकधारक परामर्श प्रक्रियाएँ शुरू करने के लिए हमें स्थायी, दीर्घ अवधि नीति और नियामक ढाँचा स्थापित करना होगा.

क्रियाविधि के लिए आवाहन

फार्मिंग फर्स्ट नीति–निर्माताओं और व्यवसाइयों के लिए वैश्विक कृषि की स्थानीय रूप से टिकाऊ कीमत वाली कड़ी विकसित करने के लिए क्रियाविधि का आवाहन प्रदान करता है. यह किसानों को लघु उद्योग व्यवसायी बनाने में सहायता देने पर केंद्रित जानकारी नेटवर्क और नीतियों की जरूरत पर जोर देता है. टिकाऊ विकास के लिए यह छः परस्पर संबंधित आवश्यकताओं का प्रस्ताव रखता है.

सहायक संगठन

क्रॉप लाइफ इंटरनैशनल
इंटरनैशनल फेडरेशन ऑफ एग्रीकल्चर प्रोड्यूसर्स
इंटरनैशनल काउंसिल फॉर साइंस
इंटरनैशनल फर्टीलाइज़र इंडस्ट्री एसोसिएशन

Farming
First

www.farmingfirst.org

कृषि के माध्यम से निरंतर प्रगति करना

खाद्यान्न, भोजन, रेशे और ईंधन की साझी जरूरत को पूरा करने के लिए पर्यावरणीय रूप से निरंतर, आर्थिक रूप से व्यवहार्य, सामाजिक रूप से जिम्मेदार तरीके से कृषि उत्पादन को बढ़ाने के वैश्विक कार्य–योजना की जरूरत है.

इस समाधान के मूल में किसान हैं–वे ही हमारे लिए फसलें उगाते हैं, ज़मीन का प्रबंधन करते हैं और जैवविविधता की रक्षा करते हैं. 1950 से लेकर अब तक जनसंख्या में लगभग तीन गुना वृद्धि हुई है. 2030 तक, जनसंख्या में 170 करोड़ तक और वृद्धि हो जाएगी, जिसमें से अधिकांश लोग विकासशील देशों में होंगे. इस सच्चाई का सामना करने के लिए, दुनिया के किसानों को 2050 तक पैदावार को दुगुना या तिगुना करना होगा. लेकिन कृषि नीतियों ने किसानों की खास तौर पर छोटे किसानों की महत्वपूर्ण भूमिका को नज़रअंदाज़ कर दिया है, जो वे निरंतर विकास को सच्चाई में बदलने में निभा सकते हैं. विकास के दबाव अत्यधिक गंभीर है. 2030 तक, जनसंख्या के मुकाबले कृषि योग्य ज़मीन का अनुपात 55% तक कम होने का अनुमान है. 2025 तक, 180 करोड़ लोग पानी की गंभीर कमी के साथ जियेंगे. इसके साथ साथ, जलवायु परिवर्तन प्रादेशिक और वैश्विक खाद्य आपूर्ति के लिए खतरा बन जाएगा. विकासशील देशों के करोड़ों लोगों की बुनियादी जीविका पर खतरा मंडराने लगेगा.

प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा करना

ज़मीन को उपयोग करने की टिकाऊ पद्धतियों को बहुतायत से अपनाने के माध्यम से भूमि प्रबंधन को बेहतर बनाया जा सकता है.

- भू क्षरण और भूमि अवनति को रोकने के लिए कृषि संरक्षण उपयोग किया जा सकता है.
- पानी के तालाबों और पानी के उपयोग का ज्यादा अच्छी तरह प्रबंधन करना चाहिए
- एकीकृत पारिस्थितिक तंत्र तरीके द्वारा वन्य जीवन और जैव विविधता को बचाना
- पारिस्थितिक तंत्र की सेवाएँ बेहतर बनाने के लिए प्रोत्साहन देना

वैज्ञानिक जानकारियों का प्रचार करना

दूरस्थ देसी समुदायों सहित वैश्विक कृषि को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक अधिकतर जानकारी मौजूद होने के बावजूद, यह अक्सर उन किसानों तक नहीं पहुँचती जिनको इनकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है.

- किसानों के लिए फसलों पर शिक्षा और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन का स्तर बढ़ाना
- ग्राम आधारित जानकारी केंद्रों के विकास को बढ़ावा देना
- किसानों के लिए मौसम, फसल और मार्केट की चेतावनियों के साथ साथ जल्दी चेतावनी देने वाली प्रणालियों के लिए पाने योग्य जानकारी की तकनीकों तक पहुँच प्रदान करना ताकि टिकाऊपन और उत्पादकता के लिए उन्हें सही फैसला लेने में मदद मिल सके.
- खुला और दो–तरफा आदान प्रदान स्थापित करना जो नीति निर्धारण और क्रियान्वन की प्रक्रिया में 'किसान की आवाज़' शामिल कर सके.

स्थानीय संसाधन विकसित करना

किसानों को उनकी उत्पादन प्रक्रिया का ज्यादा विश्वसनीयता और कम लागत में प्रबंधन करने में मदद देने के लिए उन्हें बुनियादी संसाधन उपलब्ध होने चाहिए.

- खास तौर पर महिला किसानों के लिए भूमि और जल संसाधनों तक पहुँच सुरक्षित करना
- लघु वित्त सेवाओं, खास तौर पर लघुऋण तक ग्रामीण पहुँच प्रदान करना
- किसानों के लिए आपूर्ति उपलब्ध कराने हेतु–ढाँचागत विकास–खास तौर पर सड़कों और बंदरगाहों का निर्माण करना
- मशीनी उपकरणों, बीजों, खादों और फसल सुरक्षा सामग्रियों सहित कृषि इनपुट्स और सेवाओं तक पहुँच बेहतर बनाना
- जानकारी और आपूर्ति किसानों के हाथ तक पहुँचने की पुष्टि करने के लिए अनेक स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर काम करना और प्रोत्साहन देना
- जहां पर जैवईंधन ऊर्जा की बचत और ग्रामीण विकास में योगदान देता है, वहां जैवईंधन में निवेश करें

कटी हुई फसल की सुरक्षा करना

अधिकतर गरीब देशों में, कटाई के पहले और बाद में अपर्याप्त इंतज़ाम होने के कारण फसल की उपज का 20-40% नुकसान होता है. इसी तरह से, खाद्य श्रृंखला के उत्पादन और खपत के चरणों के दौरान खाद्यान्नों की बहुत बड़ी मात्रा बरबाद होती है.

- खाद्यान्नों के संग्रहण के लिए शीतगृहों सहित स्थानीय भंडारण संयंत्रों और परिवहन प्रणालीयों को बनाना
- कृषि संबंधी जानकारी, कीटों को पहचानने और मौसम संबंधी जानकारी को स्थानीय रूप से लागू करना
- टिकाऊ खपत और उत्पादन की जरूरतों और व्यवहारों के बारे में जनता को शिक्षित करना
- मौसम और मार्केट के उतार चढ़ावों का प्रबंधन करने में किसानों को सहयोग देने वाले जोखिम प्रबंधन साधन प्रदान करना

बाजारों तक पहुँच आसान बनाना

किसानों को अपने उत्पाद मार्केट तक पहुँचाने और जरूरत होने पर उन्हें उचित कीमत की योग्यता मिलनी चाहिए.

- दूरस्थ क्षेत्रों तक मार्केट की कीमतों की ताजातरीन जानकारी पहुँचाना
- पारदर्शी जानकारी, उचित कीमतों, मजबूत बुनियादी विकास और कम अटकलबाजियों के माध्यम से मार्केटों का बढ़िया क्रियान्वन विकसित करना
- छोटे किसानों के लिए मार्केटिंग के सहकारी तरीकों को प्रोत्साहित करना
- उद्योगपति प्रशिक्षण के माध्यम से छोटे किसानों की मार्केटिंग योग्यताओं को बेहतर बनाना
- दुनिया भर में कृषि के सभी स्तरों के लिए अवसर बढ़ाने की खातिर मार्केट की कमियों को कम करना

शोध अनिवार्यताओं को प्राथमिकता देना

टिकाऊ खेती पाने के लिए स्थानीय रूप से प्रचलित फसलों, प्रबंधन तकनीकों और जलवायु परिवर्तन अपनाने को प्राथमिकता देकर गहन निरंतर शोध की आवश्यकता है.

- पानी की उपलब्धता, मिट्टी के उपजाऊपन और कटाई के बाद वाले नुकसानों के साथ साथ जलवायु प्रबंधन की चुनौतियों से संबंधित कृषि संबंधी शोध संचालित करना
- एकदम गरीब और सबसे ज्यादा जरूरतमंद क्षेत्रों के लिए जरूरी फसल की किस्मों पर शोध संचालित करना
- किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए किसान केंद्रित शोध को बढ़ावा देना
- विज्ञान और तकनीक के जिम्मेदार उपयोग के माध्यम से उपज बढ़ाना
- एकीकृत समाधानों के आसपास सार्वजनिक–निजी शोध सहकार्य स्थापित करना
- प्रासंगिक आर एंड डी के लिए सरकारी और व्यापारिक संघटनों की ओर से निवेश बढ़ाना